जीवन-परिचय—हिन्दी के महान रचनाकार गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का जन्म 13 नवम्बर, 1917 को ग्वालियर राज्य के श्यौपुर कलाँ नामक कस्बे में हुआ था। मुक्तिबोध का जन्म महाराष्ट्रीय कुलकर्णी परिवार में हुआ था। उनका परिवार मूलतः जलगांव (खानदेश) का निवासी था। अंग्रेजी शासन स्थापित होने पर उनके पूर्वज ग्वालियर रियासत में आकर बस गए। मुक्तिबोध के दादा श्री गोपालराव पुलिस में 'दफ्तरदार' की पदवी पर नौकरी करने लगे। इसके पश्चात् मुक्तिबोध के पिता श्री माधवराव भी पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर नियुक्त हुए। मुक्तिबोध की माता का नाम पार्वतीबाई था। वह धार्मिक एवं भावुक स्वभाव की महिला थीं।

मुक्तिबोध के जन्म से पूर्व माधवराव जी के दो लड़के अल्पायु में ही चल बसे थे। तीसरे पुत्ररत्न के रूप में मुक्तिबोध का जन्म हुआ। यह वह समय था, जब सामाजिक जाग्रति के साथ राजनीतिक आन्दोलन भी जोर पकड़ने लगा था। अपने परिवार में सबसे बड़े लड़के होने के कारण मुक्तिबोध के पिताजी उन्हें पढ़ा-लिखाकर बड़ा अधिकारी बनाना चाहते थे।

मुक्तिबोध की आरम्भिक शिक्षा उज्जैन, विदिशा, अमझारा, सरदारपुर आदि विभिन्न स्थानों पर हुई। पिता के पुलिस इंस्पेक्टर होने के कारण मुक्तिबोध की पढ़ाई का सिलसिला टूटता-जुड़ता रहा फलतः सन् 1930 में उज्जैन में मिडिल परीक्षा में असफलता मिली जिसे कवि अपने जीवन की पहली महत्वपूर्ण घटना मानते हैं। मुक्तिबोध अपनी बुआ के यहाँ रहते थे। 1938 ई. में उन्होंने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। बुआ के यहाँ रहते हुए ही इनका परिचय शान्ताबाई से हुआ। परिवार के विरोध के बावजूद मुक्तिबोध ने शान्ताबाई से विवाह कर लिया।

आजीविका-मुक्तिबोध के बी. ए. उत्तीर्ण करते-करते उनके पिता सेवानिवृत्त हो गए और गृहस्थी का भार मुक्तिबोध पर आ गया। 1938 ई. में मध्य प्रदेश के एक मिडिल स्कूल में उन्होंने अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। अभी उन्हें वहाँ कार्य करते चार माह ही हुए थे कि नवम्बर में डॉ. नारायण विष्णु जोशी, डॉ. प्रभाकर माचवे से मुक्तिबोध का परिचय प्राप्त कर उन्हें अपने कार्य में सहयोग देने के लिए लेने आ पहुँचे। डॉ. नारायण विष्णु जोशी उन दिनों शुजालपुर में शारदा शिक्षा सदन में प्रमुख अध्यापक के रूप में कार्य कर रहे थे। सितम्बर, 1942 से मुक्तिबोध जी ने उज्जैन के मॉडल हाईस्कूल में अध्यापन प्रारम्भ किया। सितम्बर, 1945 से त्रिलोचन शास्त्री जी के साथ बनारस में 'हंस' का संपादन किया। बनारस से मुक्तिबोध नवम्बर, 1946 में डी. एन. जैन हाईस्कूल जबलपुर आ गए। अक्टूबर, 1948 में मुक्तिबोध ने नागपुर के सूचना और प्रकाशन विभाग में नौकरी प्रारम्भ की। इस बीच मुक्तिबोध ने 'नया खून' साप्ताहिक पत्र का संपादन भी किया। सन् 1953 में मुक्तिबोध ने एम. ए. (हिन्दी) की परीक्षा उत्तीर्ण की। राजनाँदगाँव में कॉलेज खुलने पर श्री शरद कोठारी, अटल बिहारी दुबे तथा प्रमोद कुमार वर्मा के सहयोग से जुलाई, 1958 में दिग्विजय कालेज में प्राध्यापक के रूप में मुक्तिबोध की नियुक्ति हो गई।

नागपुर मुक्तिबोध के जीवन का संघर्ष काल था तो उनकी कविताओं का महत्वपूर्ण काल भी यही था। इसी काल में मुक्तिबोध ने कुछ बहुत ही श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण लम्बी कविताएँ लिखीं। 'अँधेरे में' जैसी सशक्त कविता इसी काल में लिखी गयी थी। नागपुर में रहते हुए मुक्तिबोध ने प्रसाद की 'कामायनी' पर अत्यन्त महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तक लिखी। कामायनी: एक पुनर्विचार। प्रसाद काव्य के आलोचना जगत में यह पुस्तक अपने प्रकार की एक ही पुस्तक है। कुछ महत्वपूर्ण लम्बी कविताएँ भी इसी काल में लिखी गईं। नागपुर में रहते हुए मुक्तिबोध ने 'भारत: इतिहास और संस्कृति' नामक पुस्तक लिखी जिसका कुछ भाग छोटी-सी पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ और जो मध्य प्रदेश सरकार द्वारा सेकेण्ड्री स्कूल के छात्रों के लिए पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकृत की गई, किन्तु कुछ समय बाद ही पुस्तक का विरोध प्रारम्भ हो गया और पुस्तक प्रतिबंधित कर दी गई।

Scanned with CamScanner

19 सितम्बर, 1962 के राजपत्र में पुस्तक के प्रतिबंध से संबंधित सूचना आई। 20 सितम्बर, 1962 को 'घट के युगधर्म' में पुस्तक पर प्रतिबंध का समाचार छपा।

घोर मानसिक त्रास में मुक्तिबोध के वे दिन व्यतीत हुए और उन्हीं दिनों उनकी सबसे लम्बी कविता 'अंधेरे में' प्रकाशित हुई। मुक्तिबोध का साहित्य सृजन कार्य अनवरत चलता रहा। **नरेश मेहता** के अनुसार,"जीवन मुक्तिबोध के लिए युद्ध ही था, शायद गुरिल्ला युद्ध जिसे वह छापामार स्टाइल में लड़ भी लिया करते थे।"

अस्वस्थता एवं देहावसान-मुक्तिबोध का स्वास्थ्य नागपुर में ही बिगड़ गया था, उसमें कोई सुधार नहीं हो रहा था। चक्कर आते थे, बुखार भी रहता था, एक्जीमा तो पहले से ही था, अब उसने बहुत जोर पकड़ लिया था। उनका शरीर अत्यन्त क्षीण हो गया था, फिर भी कालेज नियमित रूप से जाते थे। 7 फरवरी, 1964 को एकाएक गिर पड़े और तभी उन पर पक्षाघात का पहला प्रहार हुआ। लगातार अस्वस्थ रहते हुए 11 सितम्बर, 1964 को दिल्ली में एम्स में महान् मुक्तिबोध ने अंतिम साँस ली।

कृतित्व—मुक्तिबोध का सृजन बहुआयामी है। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। मुक्तिबोध रचनावली 6 खण्डों में प्रकाशित हो चुकी है। उनके प्रकाशित ग्रंथ इस प्रकार हैं—

1. **समीक्षात्मक ग्रंथ**—नयी कविता का आत्म-संघर्ष, नये निबन्ध, कामायनी एक पुनर्विचार, एक साहित्यिक की डायरी, नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र।

2. **कथा साहित्य**—विपात्र (उपन्यास), काठ का सपना, सतह से उठता आदमी (कहानी-संग्रह)।

3. **काव्य संग्रह**—चाँद का मुँह टेढ़ा है (मृत्यु के पश्चात् प्रकाशित)। इसके अतिरिक्त तार सप्तक (1943 ई.) में उनकी कुछ कविताएँ संकलित हैं।

'मुक्तिबोध रचनावली' का प्रकाशन हो चुका है जिसमें उनकी लगभग सभी प्रकाशित-अप्रकाशित रचनाएँ संकलित हैं।

Scanned with CamScanner